P&G COMMUNICATION & INFORMATION

Ferdinando Frega — Nando the Scribe



Gillettenarrative.com

पी एंड जी संचार और सूचना

सूचना

सबसे पहले संचार करने वाले बिना कपड़ों के आदिम आदमी थे। सबसे पहले सूचना देने वाले कपड़ों वाले आदिम आदमी थे, और साथ में प्रेस कार्ड।

फिर भी आदिम आदमी। कुछ नहीं बदला। सिवाय इसके कि पहले वालों को ज़िंदगी से बचकर निकलना था, जबकि दूसरे वाले बच निकलने वालों को फिर से ज़िंदा करके अपनी रोज़ी चलाते हैं।

लेकिन बहस या आलोचना का वक़्त नहीं है — ये वे काम हैं जो मैंने कभी किए ही नहीं।

मैं जो करना चाहूँगा वह यह है कि दोनों के बीच का मानवशास्त्रीय फ़र्क़ कहानियों के ज़रिए सुनाऊँ।

संचार का पहला सच्चा रूप — और यहाँ सब अपनी कुर्सी से उछल पड़ेंगे — ख़ामोशी है।

शब्द से पहले, आवाज़ से पहले, इशारे से पहले, मुद्रा से पहले, ख़ामोशी के अभ्यास ने हमेशा किसी इंसान की बुद्धि को उसकी सोचने-परखने और फ़ैसला करने की क्षमता से नापा है — कभी इसका उलटा नहीं।

और मर्द, इकट्ठा होकर, चुप रहे, तारों को देखते हुए, अमूर्त को, कल्पित को — जब तक कि दूर से औरतों की एक टोली, इस यक़ीन में कि वे अकेली हैं, आपस में बातें करने नहीं लगी: धीमी आवाज़ें, सधा हुआ लहजा, सधी हुई लय, एक सलीक़ेदार ताल, हर शब्द सँभालकर रखा हुआ। औरतें ऐसी ही होती हैं।

लेकिन ख़ामोशी ने इंसानियत के लिए जो पहला सबक़ छोड़ा, वह कोई भीतरी संकोच नहीं है — वह एक तरीक़ा है, हर उस जगह के भीतर एक आख़िरी सरहद जहाँ असली फ़ैसले होते हैं।

फिर भी, ख़ामोशी के भीतर का शोर ही वह चीज़ है जो कभी ग़ायब नहीं होती: वह भीतर से आता है, और वह भावनात्मक, संज्ञानात्मक, तार्किक और विवेकपूर्ण, सहज और जज़्बाती, सब एक साथ होता है।

और यहाँ, उसे सचमुच सँभाल पाने वाली, हमेशा की तरह, औरतें ही रहती हैं — इतनी मुकम्मल, इतनी कारगर, कि इंसानी नस्ल को आगे बढ़ाने का काम भी उन्हीं को सौंपा गया। (दूसरे क्षेत्रों में — जैविक में, कोशिकीय में — ऐसे नर भी हैं जो जन्म देते हैं। लेकिन वह एक अलग क़िस्म का संचार है।)

बाक़ी जो कुछ मैंने यहाँ नहीं छुआ, उसे मैं हर किसी के अपने तजुर्बे पर छोड़ता हूँ — वही हमारे होने का सबसे अच्छा हिस्सा है।

सूचना मुझे एक खेल की याद दिलाती है जो हम बचपन में खेला करते थे: सब एक घेरे में, पहला आदमी अगले के कान में एक शब्द फुसफुसाता है, और वह बारह लोगों से होता हुआ क़तार में आगे बढ़ता है। दूसरे सिरे से जो निकलता था, वह अक्सर हँसी का फ़व्वारा होता था।

खेल एक अकेले शब्द पर भी चल सकता था और एक पूरे वाक्य पर भी, और होता यह था:

शुरू कीजिए “जिएगा” से, और बारह कानों के बाद, दूसरे सिरे से जो शब्द निकलता वह होता “मरेगा”।

शुरू कीजिए ऐसे वाक्य से जैसे “हम सब जानते थे कि वह जिएगा”, और बारह कानों के बाद वह लौटता इस शक्ल में: “सब जानते थे कि वह मर चुका है, अंतिम संस्कार 12 तारीख़ को 12:00 बजे तय”। हा हा हा हा।

आज मैं मीडिया को सूचना ठीक इसी तरह आगे सरकाते देखता हूँ — किसी ख़बर की वही शुरुआती पंक्ति एक के बाद एक हर संस्थान अलग ढंग से छापता है। जिसे हम बच्चों का खेल समझते थे, वह असल में उस सूचना उद्योग का कड़वा सच है जहाँ न्यूज़स्टैंड और न्यूज़रूम के बीच कोई फ़र्क़ नहीं बचा।

आख़िर में, दोनों चीज़ें एक ही धागे से बँधी हैं — दोनों उसी एक आदिम उद्गम की संतान हैं। बस यह देख लीजिए कि लोग कपड़े कैसे पहनते हैं।

पढ़ने का आनंद लीजिए।

फर्दिनांदो